Research Paper Education

छत्तीसगढ़ बोर्ड की कक्षा दसवीं के पद्य का सौन्दर्यात्मक विष्लेशण (Chhattisgarh Board Ki Kaksha Dasvi Ke Padyon Ka Saunderyatmak Vishleshan)

Dr. Soniya Sthapak | Assistant Professor, Department Of Education, Guru Ghasidas Visvavidhyalay, Bilaspur

Jagdishvar | M.ed Student, Department Of Education, Guru Ghasidas Visvavidhyalay, Bilashpur.

ABSTRACT

प्रस्तुत षोध में षोधकर्ता ने छत्तीसगढ़ बोर्ड की कक्षा दसवीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के पद्य का सौन्दर्यबोधात्मक विष्लेशण किया है। षोधकर्ता के षोध का मुख्य उद्देष्य पाठ्यपुस्तक में पद्यांष में प्रयुक्त सौन्दर्यबोधक तत्व का विष्लेशण करना था, जिसको ध्यान में रखते हुए षोधकर्ता ने पद्यांष के सौंदर्य बोधात्मक विष्लेशण के लिए एक विषिश्ट प्रारूप तैया किया जिसके अंतर्गत सौंदर्यबोधक तत्व जैसे रस, अलंकार, भावपक्ष और कलापक्ष का विष्लेशण किया। इस विषिश्ट प्रारूप के तहत विष्लेशण करने के बाद यह पाया गया कि पाठ्यवस्तु के पद्यांष में उपयुक्त सौन्दर्यबोधात्मक विष्लेशण करने के बाद षोधकर्ता ने पाया कि पाठ्यपुस्तकों के गद्यॉंष में सौन्दर्यबोधक तत्व का प्रयोग सीमित षब्दों के रूप में प्रयोग किया गया है। इन तत्वों के सीमित प्रयोग के फलस्वरूप पद्यांष का अध्ययन करने में छात्रों की रूचि कम जागृत होती है तथा वे पाठ्यपुस्तक के अध्ययन से दूर भागते हैं, जिसको देखते हुए षोधकर्ता ने यह भी महसूस किया कि यदि हिंदी पाठ्यपुस्तक के पद्यांष में सौंदर्यबोधक तत्वों का समुचित रूप से प्रयोग किया जाये तो छात्रों की रूचि जागृत हो सकती है क्योंकि इसके प्रयोग से पाठ्यवस्तु रूचि पूर्ण हो जाएगी। तब छात्र इस पाठ्यवस्तु को पढ़ने में रूचि व तल्लीनता दिखा सकते हैं। छात्रों की हिंदी पाठ्यपुस्तकों के प्रति खोयी हुयी रूचि वापस आ सकती है व हिंदी भाशा को प्रभावपूर्ण व सरस बनाया जा सकता है।

KEYWORDS

भूमिका :

''है भव्य भारत ही, हमारी मातृभूमि हरी भरी।
हिंदी हमारी राश्ट्रभाशा, और लिपि नागरी।।'' मैथिलीषरण गुप्त

राश्ट्रकवि मैथिलीषरण गुप्त जी कहते हैं कि हमारा भारत देष अद्वितीय सुन्दर व अद्भूत देष है। हमारी मातृभूमि हरी–भरी है, हमारी देष की राश्ट्रभाशा हिंदी है और जिसकी लिपि देवनागरी है। हमारी राश्ट्रभाशा हमारी राश्ट्रीय एकता का प्रतीक है।

अर्थात प्रत्येक भाशा केवल भाशा नहीं होती, बल्कि वह समाज, संस्कृति,

प्राचीन काल की षिक्षा व्यवस्था के बारे में अध्ययन करने से मिलता है कि प्राचीन काल में हिन्दी पाठ्यपुस्तक का छात्र बड़ी तल्लीनता व रूचि के साथ अध्ययन करते थे। अध्ययन के समय भावपक्ष का रसपान करते थे, पाठ्यपुस्तक के मूलभूत सिद्धान्तों, नियमों व आदर्षों को अपने जीवन व व्यवहार में ढालते हुए अनुसरण करते थे। किन्तु वर्तमान समय की षिक्षा व्यवस्था के बारे में अध्ययन करने से मिलता है कि प्राचीन काल की तरह पाठ्यपुस्तक को पढ़ने में रूचि अब बहुत कम मिलती है। अब हिंदी पाठ्य पुस्तक के पद्य को पढ़ने में छात्र रूचि कम लेते हैं। छात्र पद्य के भावार्थ को कम समझ पाते है। भावार्थ को न समझने का मूलभूत कारण पाठ्यवस्तु में कहीं क्लिश्ट षब्द का प्रयोग है, तो कहीं–कहीं अंग्रेजी भाशा के षब्दों का प्रयोग और कहीं क्षेत्रीय बोलियों के षब्दों का प्रयोग भी हो सकता है। पाठ्यपुस्तक में सार्थक षब्दों का अभाव रहता है। पाठ्यपुस्तक में सार्थक षब्दों का अभाव ही छात्रों के अन्दर अरूचि पैदा कर देता है। सार्थक षब्द ही हिन्दी पाठ्यपुस्तक के सौन्दर्यबोधक षब्द है। हिन्दी पाठ्यपुस्तक को लोकप्रिय बनाने के लिए पाठ्यपुस्तक में सौन्दर्यबोधक तत्व जैसे पद्य में संदीर्यबोधक तत्व रस, अलंकार, छंद (दोहा, चौपाई), वक्रोति, ध्वनि, बिम्ब, प्रतीक, अभिव्यंजनाबाद, भाववादी विचारधारा और वस्तुवादी विचारधारा है। हिंदी पाठ्य पुस्तक का सौंदर्यबोधात्मक विष्लेशण करने के लिए सर्वप्रथम सौंदर्य व सौंदर्य से संबंधित महत्वपूर्ण बिन्दुओं का वर्णन करना आवष्यक है।

सौन्दर्यबोध :

भारतीय दृश्टिकोण के अनुसार सौंदर्य :

भारतीय दृश्टिकोण के अनुसार सौंदर्य षब्द का प्रयोग अधिक प्राचीन नहीं किन्तु सौंदर्य की अवधारणा उसके वाचक–व्यंजक षब्दों तथा उक्तियों का अभाव नहीं है। रामायण में 'सुन्दर' षब्द सामान्य रूप से प्रयुक्त हुआ है। उसके एक भाग का नाम ही सुंदरकाण्ड है। संस्कृत वांग्मय में सुन्दर के निम्नोक्त पर्याय उपलब्ध होते है' –

''सुन्दरं रूचिरं चारू सुशम साधु षोभनम।
कान्त मनोरमं रूच्यं मनोज्ञं मन्जु मुंजलम।।(52)।।
अभीश्टेअभीप्सितं हृदयं दयितं वल्लभं प्रियम।।(53)।।''
(अमरकोष तृ 0 का 0)

अर्थात सुन्दर, रूचिर, चारू, सुशम, साधु, षोभन, कान्त मनोरम, रूच्य, मनोज्ञ और मंजुल है। अभीश्ट के अर्थ में अभिसिप्तत, हृदय, दयित, बल्लभ और प्रिय को सौंदर्य रूपी षब्द कहते हैं। इसके अतिरिक्त और भी षब्द है जो इसी अर्थ का वाचन करते हैं जैसे ललित, सुश्टु, कम्य, कमनीय, रमणीय आदि होते हैं।

संक्रियात्मक परिभाशा :

सौन्दर्यबोध :

हिन्दी पाठ्य पुस्तक में जिन तत्वों के माध्यम से पाठ्यवस्तु की सुन्दरता, सरलता व सार्थकता सदैव परिदृष्य परिलक्षित और दृष्यमान होती हैं उसे सौन्दर्यबोध कहते हैं। प्रस्तुत षोध पत्र के षोधकर्ताओं ने पद्य में सौन्दर्यबोधक तत्व के अंतर्गत रस, अलंकार, कलापक्ष और भावपक्ष का वर्णन किया गया है।

पद्य के सौंदर्यबोधक तत्व का वर्णन :

रस :

''रस'' का षाब्दिक अर्थ है ''आनंद''। काव्य को पढ़ने या सुनने से जिस आनंद की अनुभूति होती है, उसे ''रस'' कहा जाता है। सर्वप्रथम आचार्य भरत मुनि (1वीं सदी में) ने अपने ग्रंथ ''नाट्यषास्त्र'' में रस का विवेचन किया। उन्हें रस संप्रदाय का प्रवर्तक माना जाता है। भरत मुनि के प्रमुख सूत्र – ''विभावानुभाव व्यभिचारिसंयोग. ाद रस निश्पत्तिः'' अर्थात विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी (संचारी) के संयोग से रस की निश्पत्ति होती है।

अलंकार :

अलंकार का षाब्दिक अर्थ है ''आभूशण''। जिस प्रकार सुवर्ण आदि के आभूशणों से षरीर की षोभा बढ़ती है उसी प्रकार काव्य अलंकारों से काव्य की षोभा बढ़ती है। संस्कृत के अलंकर सम्प्रदाय के प्रतिश्ठापक आचार्य दण्डी के षब्दों ''काव्य षोभाकरान धर्मान अलंकारान प्रचक्षते'' अर्थात काव्य के षोभाकारक धर्म (गुण) अलंकार कहलाते हैं।

''अलंकरोति इति अलंकारः'' अर्थात षोभाकारक पदार्थ को अलंकार कहते हैं।

भाव पक्ष :

कोई भी पाठ्यवस्तु जो छात्र के अंदर किसी प्रकार का भाव जागृत कर दे वही भावपक्ष है तथा पाठ्यवस्तु का भावार्थ या केंद्रीय भाव और पाठ्यवस्तु का सार ही उसका भावपक्ष होता है। भावपक्ष ही पाठ्यवस्तु का मुख्य संदेष देता है।

कलापक्ष :

पाठ्यवस्तु में कलापक्ष के अंतर्गत हम पाठ्यवस्तु में समाहित भाशा व उसकी षैली का अध्ययन करते हैं। भाशाषैली के माध्यम से पाठ्यवस्तु की साहित्यिक भाशाषैली के बारे में जानकारी प्राप्त होती है।

उद्देष्य :

इस लघु षोध के अंतर्गत निम्नलिखित उद्देष्य है।

(1) कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक में वर्णित रस का अध्ययन।
(2) कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक में सम्मिलित अलंकारों का अध्ययन।
(3) पाठ्यपुस्तक में समाहित कलापक्ष का अध्ययन।
(4) कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्यपुस्तक में समावेषित भावपक्ष का अध्ययन।

प्रविधि :

प्रस्तुत षोध में षोधकर्ताओं ने सौंदर्यबोधात्मक विष्लेशण के लिए नीचे दिये गये विषिश्ट प्रारूप को अपनाया व दसवीं कक्षा की हिंदी पाठ्यपुस्तक का विष्लेशण किया

गया है।

क्र.सं.	पाठ का नाम	पद्य	सौन्दर्यबोधक तत्व			
		पद्यांष	रस	अलंकार	भावपक्ष	कलापक्ष

सौन्दर्यात्मक विष्लेशण :
पद्यांष के अन्तर्गत किसी कविता, दोहा या गीत को पढ़ने के बाद उसमें वर्णित रस और प्रयुक्त अलंकार का अध्ययन किया गया है। उसके बाद उसमें समुचित रूप से समावेषित कलापक्ष के अंतर्गत भाशा–षैली तथा भावपक्ष का अध्ययन किया गया है। इस प्रकार से पाठ्यवस्तु के पद्यांष का सौन्दर्यात्मक विष्लेशण किया गया है।

परिणाम :
परिणाम किसी भी षोध का मापन होता है। जब षोधकर्ता अपने षोध कार्य को संपन्न करते हुए अंतिम छोर के करीब पहुंचता है तो उसे ज्ञात होता है कि उसने अपने कार्य में जो उद्देष्य निर्धारित किये थे उन उद्देष्यों की कहां तक पूर्ति हुयी है।

प्रस्तुत षोध में षोधकर्ताओं को निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुए।

हिंदी पाठ्य पुस्तक में प्रयुक्त रसों का वर्णन :
प्रस्तुत पाठ्यपुस्तक में दस प्रकार के रसों का वर्णन किया गया है जो निम्न प्रकार से है (1) श्रृंगार रस (2) हास्य रस (3) करूण रस (4) रौद्र रस (5) वीर रस (6) भयानक रस (7) वीभत्स रस (8) अद्भूत रस (9) षांत रस (10) वात्सल्य रस।

हिंदी पाठ्यपुस्तक में वर्णित अलंकार का वर्णन :
कक्षा दसवीं की पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित पाँच प्रकार के अलंकारों का प्रयोग किया गया है – (1) ष्लेश अलंकार (2) रूपक अलंकार (3) उत्प्रेक्षा अलंकार (4) उपमा अलंकार (5) मानविकीकरण अलंकार।

पाठ्यवस्तु में समावेषित कलापक्ष की व्याख्या :
दसवीं की हिन्दी पाठ्यपुस्तक के पाठ्यवस्तु के पद्यांष में सरस, प्रवाहपूर्ण और सा.ि हत्यिक भाशा का प्रयोग किया गया है। भाशा षैली के अन्तर्गत समास षैली, व्यास षैली, समीक्षात्मक षैली, भावात्मक षैली, गवेशणात्मक षैली, व्यंग्य प्रधान षैली, वि. वेचनात्मक षैली, वर्णनात्मक षैली, गीतात्मक षैली, कलात्मक षैली, चित्रात्मक षैली, प्रतीकात्मक षैली, बिम्ब विधान षैली तथा सरस, स्वाभाविक, प्रवाहपूर्ण, ओजमयी और चुटीली षैली का प्रयोग किया गया है।

पाठ्यपुस्तक में भावपक्ष की सार्थकता का वर्णन :
पाठ्यपुस्तक में भावपक्ष पाठ्यवस्तु के भावार्थ व सार्थकता से है। पाठ्यवस्तु का भ. ावार्थ बताने में भावपक्ष विषेश महत्व रखता है। जिस पाठ्यवस्तु में भावपक्ष का अीााव रहता है, वह पाठ्यवस्तु नीरस हो जाती है व अर्थहीन प्रतीत होती है। अतः पाठ्यवस्. तु की नीरसता को दूर करने के लिए भावपक्ष का विषेश महत्व रखता है।

निश्कर्श :
किसी भी षोध का मुख्य उद्देष्य षोध समस्या के परिणामों तक पहुँचना है। निश्कर्श वास्तव में षोध के वे परिणाम है जिन्हें संकलित विचारों के विष्लेशण व विवेचन के आधार पर प्राप्त किया जाता है।

प्रस्तुत षोध कार्य में षोधकर्ता भी प्राप्त परिणाम स्वरूप कुछ निश्कर्श निकालने में समर्थ हुए हैं जो निम्न प्रकार से है :–

कक्षा दसवीं की हिंदी पाठ्य वस्तु के अंतर्गत पद्य में रस, अलंकार, भावपक्ष और कल. ापक्ष का प्रयोग उचित रूप से किया गया है जो छात्रों के मानसिक स्तर के अनुकूल है फिर भी यदि पद्य में रस, अलंकार के अन्य रूपों का वर्णन किया जाता तो पद्य की सार्थकता में चार चाँद लग सकते थे जिससे पाठ्यवस्तु अधिक प्रभावषाली प्रतीत हो सकती थी। अतः हिंदी पाठ्यवस्तु को सौंदर्य पूर्ण बनाने के लिए और उचित सौंदर्य बोधक तत्वों का समावेष होना चाहिए था जिससे पाठ्यवस्तु और अधिक आ. कर्शक, रूचिपूर्ण, प्रभावपूर्ण प्रदर्षित हो सके।

प्रस्तुत षोध के निश्कर्शों के आधार पर कहा जा सकता है कि यह षोध षिक्षा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्ध होगा। प्रस्तुत षोध के अंतर्गत पाठ्य वस्तु में समावेषित पाठ्य पुस्तक का सौंदर्यबोधात्मक विष्लेशण किया गया है। जिससे यह ज्ञात होता है कि पाठ्य वस्तु में सौंदर्य बोधक तत्वों का विषेश महत्व है। यदि पाठ्य वस्तु में सौंदर्य बोधक तत्वों का समावेष उचित रूप से कम रहेगा या पूर्णतः अभाव रहेगा तो छात्रों की पढ़ते समय अरूचि पैदा हो सकती है। जिससे वे हिंदी पाठ्यवस्तु पढ़ने से दूर भागेंगे। अतः उनके इस दूर भागने की प्रवृत्ति को दूर करने के लिए पाठ्यवस्तु के सौंदर्य बोधक तत्वों को सही तरीके से समावेषित किया जाये।

अतः कहा जा सकता है कि प्रस्तुत षोध पत्र छात्रों के अंदर सकारात्मक दृश्टिकोण भरने और षिक्षकों को अध्यापन कार्य करते समय बच्चों में कैसे रूचि जागृत करने में विषेश महत्व रखती है। पाठ्यवस्तु में सौंदर्य बोधक तत्वों के उचित प्रयोग से हिंदी साहित्य को नवीन दिषा और हिंदी साहित्य को षिखर पर पहुँचाने में लाभदायक सिद्ध हो सकती है।

भारत महान बने विष्व में, यही भारत की अभिलाशा है।

हिंदी का प्रसार हो विष्व में, जो गौरव मेरी राजभाशा है।

REFERENCES

(1) कुमार, वी. (1967), सौंदर्यषास्त्र के तत्व, दिल्ली : राजकमल प्रकाषन। द्य (2) तिवारी, टी. (1987), प्रगतिषील कविता में सौन्दर्य चिन्तन, नई दिल्ली : भारतीय भाशापीठ प्रकाषन। द्य (3) तिवारी, आर. (1992), हिन्दी का गद्य साहित्य। द्य (4) दीक्षित, सी.एल. (1989), आधुनिक काव्य में सौन्दर्य बोध के विविध आयाम, दिल्ली : सबरी संस्थान प्रकाषन। द्य (5) नरसिंहाचारी, एस.टी. (2000), सौंदर्यषास्त्रीय समीक्षा, नई दिल्ली : वाणी प्रकाषन। द्य (6) नगेन्द्र, (संवत 2031), भारतीय सौंदर्यषास्त्र की भूमिका, दिल्ली : नेषनल पब्लिषिंग हाउस, दरियागंज। द्य (7) पाण्डेय, आर.एस. (संवत 2064), हिन्दी षिक्षण, आगरा : अग्रवाल पब्लिकेषन। द्य (8) मेघ, आर.के. (1980), साक्षी है सौंदर्य प्राष्निक, नई दिल्ली : नेषनल पब्लिषिंग। द्य (9) मालवीय, एस. (1986), हिन्दी काव्य में उरोज सौन्दर्य, नई दिल्ली : अयन प्रकाषन। द्य (10) मिश्र, डी. (1987), जायसी के ग्रन्थों का काव्य षास्त्रीय सौंदर्य, लखनऊ : नवयुग ग्रंथागार। द्य (11) मेघ, आर.के. (1992), कामायनी और उसकी मनस्सौंदर्य एवं सामाजिक भूमिका, नई दिल्ली : यूनिवर्सिटी पब्लिकेषन। द्य (12) मन्हास, जे.एस. (1986), सौंदर्यबोध षास्त्रीय विष्वकोश की भूमिका, नई दिल्ली : राधाकृश्ण प्रकाषन। द्य (13) रोहिताष्व (1980), समकालीन कविता मार्क्सवादी सौंदर्यषास्त्र के परिप्रेक्ष्य में, इलाहाबाद : प्रभात प्रकाषन। द्य (14) सिंह, जी.पी. (1989), महादेवी वर्मा की काव्यसौंदर्य भावना, इलाहाबाद : सुपर फाइन प्रिंटर्स। द्य (15) हाउस बाफना, पी. (1983), सौंदर्यषास्त्र और आधुनिक हिन्दी कविता, दिल्ली। द्य